The Chitransh Academic & Research
International Journal of Multidisaciplinary Reseaech
An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume1 | Issue 1 | June 2025
ISSN: 3049-303X (Online)
Website: www.thechitranshacadmic.in

चैनपुर प्रखण्ड (जिला कैमूर) में कृषि विकास के आयाम : एक भौगोलिक अध्ययन

मो० मुसलीम राईन [1]
शोधार्थी, स्नातकोत्तर भूगोल विभाग, वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा
प्रो० (डॉ) ललित सागर [2]
शोध निर्देशक, विभागाध्यक्ष, स्नातकोत्तर भूगोल विभाग , वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा

लेख विवरण

शोधपत्र

प्राप्ति तिथि: 19/01/2025
स्वीकृति तिथि: 26/01/2025
प्रकाशनतिथि: 30/01/2025
मुख्य शब्द :संसाधन, जीवन शैली, आर्थिक, कृषि, जनसमुदाय।

सारांश

भूमि प्रकृति प्रदत्त बड़ा ही महत्वपूर्ण संसाधन है। जिस पर सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक कार्य किये जाते हैं। यह व्यक्ति के आर्थिक स्रोतों, व्यवसायिक क्रियाओं, जीवन शैली एवं उपलब्धियां का ही निर्धारण नहीं करती वरन् उसके सामाजिक आर्थिक क्रिया कलापों को भी प्रभावित करती है। अतः मनुष्य प्राकृतिक एवं मानवीय परिवेश में सामंजस्य स्थापित करते हुए, भूमि संसाधन का अधिकाधिक उपयोग करने का सतत् प्रयास करता है क्योंकि किसी क्षेत्र भूमि उपयोग वहाँ के प्राकृति एवं सांस्कृतिक उपादानों के संयोग का प्रतिफल होता है। यही कारण है कि किसी स्थान विशेष के भूमि उपयोग की विभिन्न अवस्थाओं उस क्षेत्र विशेष की सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक व्यवस्था का द्योतक होती है। अतः भूमि का सही उपयोग आवश्यक है क्योंकि वास्तव में यह समृद्धि का प्रतीक है। चैनपुर प्रखण्ड पठारी एवं समतल जलोढ़ मैदान है। इस क्षेत्र की मिट्टी में उर्वरा शक्ति अधिक है, उत्तम जल सुविधा है, जलवायु अनुकूल है। यह क्षेत्र कृषि प्रधान है। यहाँ जनसंख्या वृद्धि, अशिक्षा, उद्योगों की कमी एवं बेरोजगार और सरकारी सुविधाओं का अभाव आदि मौलिक समस्यायें हैं। जनसमुदाय पूर्णतः कृषि पर निर्भर है।

प्रस्तावना:

चैनपुर प्रखण्ड कार्यालय, जिला मुख्यालय से 14 कि.मी. की दूरी पर भभुआ–धरौली पथ के उत्तर तरफ सरकारी भवन में अवस्थित है। प्रखण्ड मुख्यालय से 01/02 कि.मी. की दूरी पर चैनपुर थाना अवस्थित है। जहाँ पर हरसू, ब्रह्मधाम, बख्तियार खाँ का रौजा एवं सिंचाई विभाग के द्वारा निर्मित जगदहवाँ डैम पर्यटन के लिए दर्शनीय स्थल है। हरसू ब्रह्मधाम की दुरी चैनपुर से 01 कि.मी. की व बख्तियार खाँ का रौजा 03 कि.मी. तथा जगदहवाँ डैम 08 कि.मी. पर अवस्थित है। इस प्रखण्ड में 15 पंचायत मैदानी इलाके में अवस्थित है। जबकि 02 पंचायत रामगढ़ एवं डुमरकोन, कैमूर की पहाड़ी में अवस्थित है। इस प्रखण्ड में कैमूर की पहाड़ी से श्रेणियों में अवस्थित है।

चैनपुर (जिला– कैमूर) विश्व के नक्शे पर $24^{0}55'00''$ उत्तरी से $25^{0}12'30''$ उत्तरी अक्षांश तक और $83^{0}25'00''$ से $84^{0}41'00''$ पूर्वी देशान्तर के मध्य अवस्थित है। चैनपुर प्रखण्ड के पूरब में भभुआ तथा भगवानपुर प्रखण्ड पश्चिम में कर्मनाशा नदी, उत्तर में चाँद प्रखण्ड एवं दक्षिण में अधौरा प्रखण्ड की सीमाओं से घिरा है।

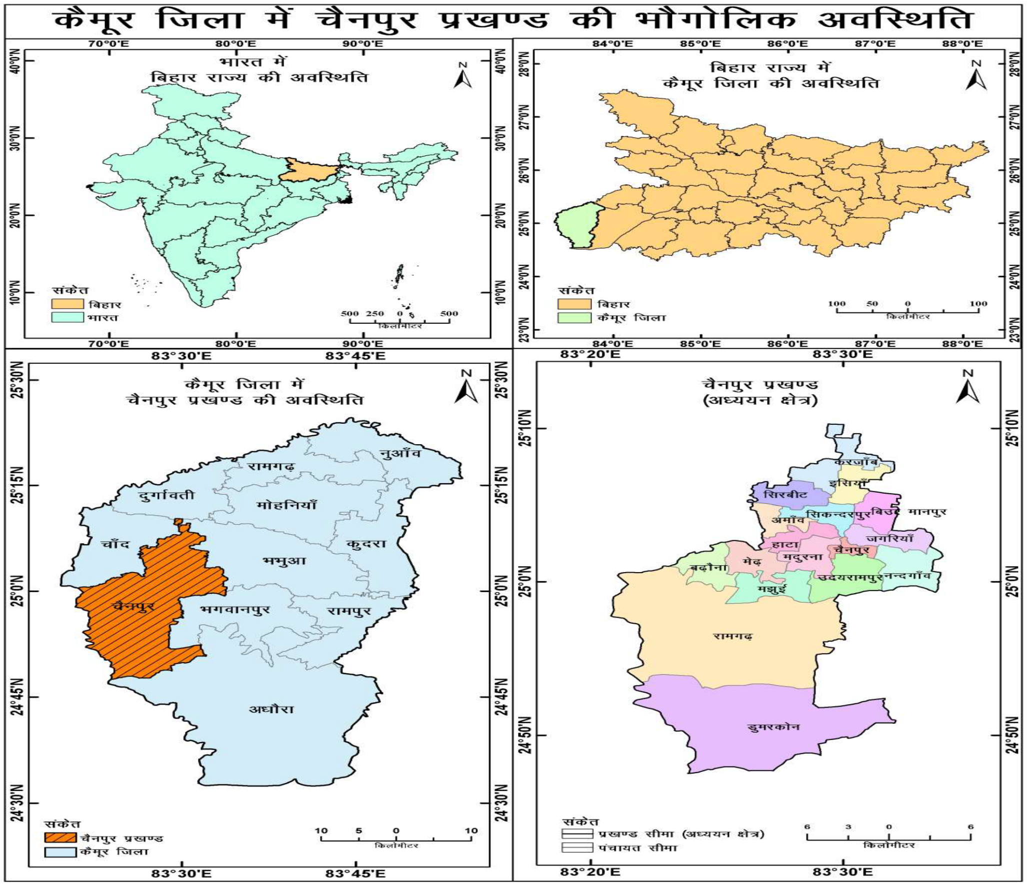

सामान्य भूमि–उपयोग

भूमि उपयोग से वर्तमान कृषि एवं भावी कृषि प्रसार की सम्भावनाओं का ज्ञान होता है। भूमि उपयोग का अर्थ वास्तविक भूमि उपयोग से है चाहे वह गृह अथवा उद्योग के लिए हो या अन्य के लिए। सामान्यतः भूमि उपयोग की दशायें क्षेत्र विशेष के आर्थिक स्वरूप को स्पष्ट करती है। स्थान एवं समय सापेक्ष्य में भू–उपयोग की दशायें भिन्न–भिन्न हो सकती है तथा इनमें परिवर्तन हुआ करता है। वर्तमान स्वरूप संयुक्त आकार के कारण विशेषतः भविष्य में भूमि उपयोग की शुरूआत (Stamp 1963) हुई थी। पूर्व काल में

उपयोग किये गए भूमि उपयोग का रूप रेखा वर्तमान भूमि उपयोग की रूप रेखा से भिन्न है। भूमि उपयोग का विभाजन एक महत्वपूर्ण कृषि प्रणाली है जो उद्देश्य को पूर्ण करती है। भूमि उपयोग के सामान्य विभाजन में कुछ मुख्य विषय जैसा कि कृषि, वन एवं अधिवास आदि है। कृषि क्षेत्र में भूमि का वर्गीकरण क्षेत्र, उपयोग आदि के आधार पर किया जाता है जिसका मुख्य उद्देश्य कृषि कार्य तथा मानव उपयोग से है।

भूमि उपयोग का विभाजन का मुख्य उद्देश्य फसल की उपज हेतु कृषि में भूमि उपयोग भिन्न–भिन्न प्रकार से आवश्यकता के अनुसार किया जाता है जो फसल की उत्पत्ति पर आधरित होता है।

भूमि उपयोग की स्थिति या आकार को मुख्यतः तीन खंडों में बाँटा गया है–

1. **भौतिक कारक** :– भौतिक स्वरूप, जलवायु और मिट्टी जो भूमि की उर्वरा शक्ति बो बतलाता है, बढ़ाता है एवं स्थिर करता है।
2. **आर्थिक कारक** :– इनके अन्तर्गत मुद्रा संबंधी मूलधन, मूल्य व्यापार एवं तकनीक तथा अन्य कारक सम्मिलित है।
3. **सांस्कृतिक कारक** :– पेशा, जनसंख्या, घनत्व, सामाजिक एवं आर्थिक संस्थाएँ आदि उस कारक में सम्मिलित हैं।

भारत में प्रथम बार ब्रिटिश काल में भूमि उपयोग के सन्दर्भ में मार्गदर्शन किया गया। क्रमबद्ध ढंग से भूमि का सर्वे 1913–14 में किया गया। जिसके रिपोर्ट के आधार पर भूमि के मानक पैमाने का 16 इंच = 1 मील बताया गया। इसके बाद 1972 में नया सर्वे किया गया। क्षेत्रीय भूमि उपयोग के भौगोलिक स्वरूप की स्थिति सामाजिक स्वरूप तथा समय–समय

पर उपयोग में भिन्नता दृष्टिगोचर हुई है।

भूमि उपयोग का स्वरूप :

भूमि उपयोग के अध्ययन में भूमि को दो भागों में बाँटा गया है– (1) कृषिय भूमि तथा (2) अकृषिय भूमि (गैर कृषि भूमि)।

(1) कृषिय भूमि :– इसके अन्तर्गत शुद्ध बोया गया क्षेत्र, अन्य परती उसर और गैर कृषि योग्य भूमि को सम्मिलित किया जाता है।

(2) अकृषिय भूमि :– इसके अन्तर्गत स्थायी चारागाह, अन्य गोचर भूमि, विविध वृक्ष एवं गाछी, गैर कृषि कार्यों में लगाई गई भूमि।

चैनपुर प्रखण्ड के भूमि–उपयोग को निम्नलिखित भागों में विभक्त किया गया है–

भूमि उपयोग विवरणी 2021–22
(चैनपुर प्रखण्ड)

विवरणी	एकड़ डि०	प्रतिशत
1. उसर एवं गैर कृषि योग्य भूमि	34488.99	30.72
2. गैर कृषि कार्य में लगाई गई भूमि स्थल एवं जल क्षेत्र	8302.64	7.39
3. कृषि योग्य बंजर भूमि	775.48	0.69
4. स्थायी चारागाह एवं गोचर भूमि	28.89	0.02
5. विविध वृक्ष एवं गाछी	35763.36	31.85
6. चालू परती भूमि	4032.95	3.59
7. शुद्ध बोया गया क्षेत्र	28874.44	25.71
कुल	112266.75	100%

स्रोत – सांख्यिकी विभाग, चैनपुर (2022)

भूमि उपयोग विवरणी 2021–22 (चैनपुर प्रखण्ड)

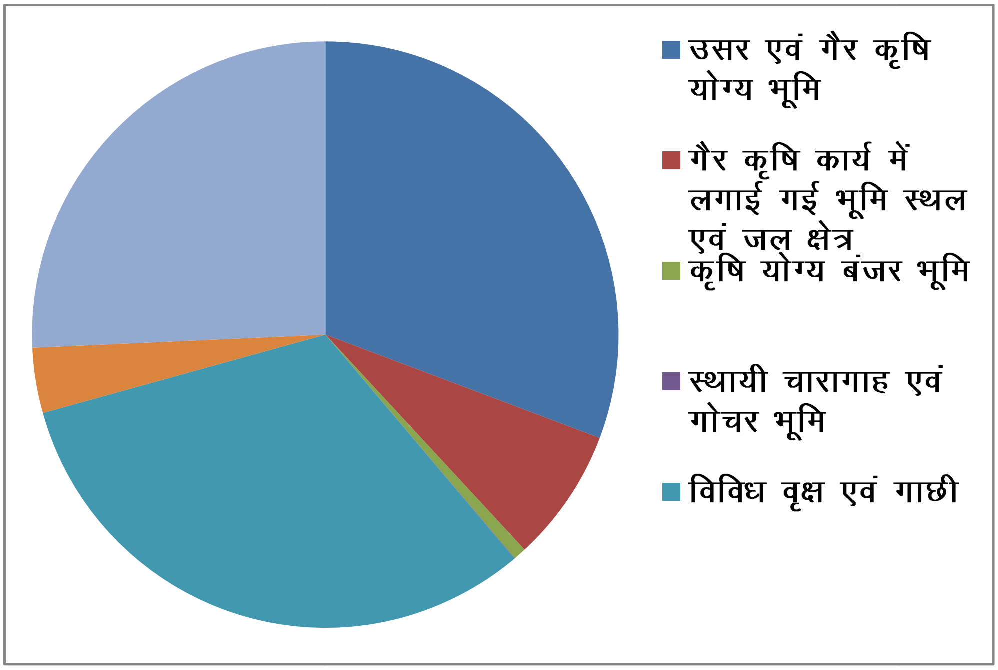

निष्कर्ष :–

चैनपुर प्रखण्ड गंगा नदी द्वारा निर्मित पुरानी जलोढ़ मैदान है। इस क्षेत्र की मिट्टी में उर्वरा शक्ति अधिक है, जल सुविधा है, जलवायु अनुकूल है। यह क्षेत्र कृषि प्रधान है। यहाँ जनसंख्या वृद्धि, अशिक्षा, उद्योगों की कमी एवं बेरोजगार और सरकारी सुविधाओं का अभाव आदि मौलिक समस्यायें हैं। जनसमुदाय पूर्णतः कृषि पर निर्भर है। जनवृद्धि के कारण कृषि क्षेत्र का विस्तार हुआ है। भूमि को बाँटकर कृषि योग्य बनाने का प्रयास किया गया है। 1964 में हरित क्रांति के पश्चात् नयी तकनीक एवं उर्वरकों के समुचित प्रयोग से उत्पादन में वृद्धि हुई है। 2021–22 को आधार वर्ष मानकर चैनपुर प्रखण्ड के सामान्य भू उपयोग, भू उपयोग क्षमता, शस्य गहनता, शस्य उत्पादकता एवं कृषि के अन्य तत्वों एवं कृषि विकास के आयाम को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

संदर्भ :–

1. दुबे बेचने एवं सिंह मंगला ''समन्वित ग्रामीण विकास'' 1985, पृ. 110.

2. Gordon J. Fielding 'Geography as Social Science (1974) p. 321. (The actual use of Land wheter for a crop house as Industry)
3. Pathak G.H. : A study in Methodology and Cribciation Region and there Role on Agricultural regionllization A study in U.P. Himalya NGSI. 1977, p. 37.
4. Behari, Bepin; Rural Industrialization in India, Vikash Publishing House, Pvt. Hd., New Delhi (1976), p. 3
5. Statement of Industrial Policy, Ministry of (Industrial Development, Government of India, New Delhi (1978).